

मुख्य जनसंपर्क अधिकारी कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया
प्रेस विज्ञप्ति

जामिया मिल्लिया इस्लामिया के नेल्सन मंडेला शांति एवं संघर्ष समाधान केंद्र ने “अव्यवस्था में विश्व व्यवस्था: बदलती भू-राजनीति पर परिप्रेक्ष्य” विषय पर एक सम्मेलन आयोजित किया

नई दिल्ली, 30 अप्रैल, 2025

नेल्सन मंडेला शांति एवं संघर्ष समाधान केंद्र (एनएमसीपीसीआर), जामिया मिल्लिया इस्लामिया ने अंतर्राष्ट्रीय शांति अध्ययन केंद्र, नई दिल्ली के सहयोग से हाल ही में अप्रैल, 2025 में विश्वविद्यालय के मीर अनीस हॉल में “अव्यवस्था में विश्व व्यवस्था: बदलती भू-राजनीति पर परिप्रेक्ष्य” विषय पर एक दिवसीय स्नातक सम्मेलन का आयोजन किया। सम्मेलन का उद्देश्य वर्तमान विश्व व्यवस्था में बदलती भू-राजनीति का मानचित्रण करना था, जिसमें जामिया मिल्लिया इस्लामिया के विभिन्न विभागों के संकाय सदस्यों, स्नातकोत्तर छात्रों और पीएचडी शोधार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस अवसर पर जामिया मिल्लिया इस्लामिया के माननीय कुलसचिव प्रोफेसर मोहम्मद महताब आलम रिजवी मुख्य वक्ता थे।

इस सम्मेलन में तीन व्यापक विषयगत सत्रों में विश्व व्यवस्था में टूटन और अव्यवस्था को शामिल किया गया, जिसमें इस बात की जांच की गई कि समकालीन विश्व व्यवस्था में शक्ति, प्रतिरोध, पहचान तथा संप्रभुता को कैसे चुनौती दी जा रही है और फिर से कल्पना की जा रही है।

इस कार्यक्रम में 23 अकादमिक शोध पत्र प्रस्तुत किए गए, जिसमें अभूतपूर्व चुनौतियों का सामना कर रही उभरती वैश्विक व्यवस्था में अनिश्चितता और परिवर्तन के युग पर चर्चा की गई। शोध पत्र में मुख्य रूप से सैद्धांतिक विश्व व्यवस्था और प्रतिस्पर्धा, सहयोग और संघर्ष के माध्यम से इसके अनुभवजन्य अभिव्यक्तियों के जटिल अंतर्संबंध को शामिल किया गया, जिससे उन मार्गों पर प्रकाश डाला गया, जिनके माध्यम से एक अधिक न्यायपूर्ण, समावेशी और टिकाऊ अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली की कल्पना की जा सकती है।

सम्मेलन की शुरुआत नेल्सन मंडेला शांति एवं संघर्ष समाधान केंद्र के डॉ. बिनीश मरियम के स्वागत भाषण से हुई, जिसमें उन्होंने कार्यक्रम की अवधारणा और गहन विद्वत्तापूर्ण जुड़ाव के लिए इसकी अकादमिक और संस्थागत प्रासंगिकता को दोहराया। इसके बाद नेल्सन मंडेला शांति एवं संघर्ष समाधान केंद्र के माननीय निदेशक प्रोफेसर अबुजर खैरी ने एक संबोधन दिया, जिन्होंने युद्धों और अंतर्राष्ट्रीय संरचना में अस्थिरता के बीच विश्व व्यवस्था में टूटन से उत्पन्न होने वाली महत्वपूर्ण चुनौतियों पर अपनी परिचयात्मक टिप्पणी दी। प्रोफेसर खैरी ने छात्रों और विद्वानों को इस तरह के अकादमिक विचार-विमर्श की आवश्यकता पर जोर दिया।

अपने बीज वक्तव्य में, प्रोफेसर महताब आलम रिजवी ने वेस्टफेलियन व्यवस्था की जटिलताओं को समझने के महत्व और बदलती भू-राजनीति से उत्पन्न क्षेत्रीय संप्रभुता के लिए चुनौतियों पर विस्तार से बात की। माननीय कुलसचिव ने अपने उद्घाटन भाषण में महान शक्ति प्रतिद्वंद्विता, गैर-राज्य अभिनेताओं के उदय और प्रौद्योगिकी और वैश्वीकरण के बाद की चुनौतियों और राष्ट्र-राज्यों पर उनके प्रभाव के बीच अंतर्संबंधों पर अपने बौद्धिक विचार साझा किए। उन्होंने तर्क दिया कि अव्यवस्था केवल राज्य-केंद्रित विश्व व्यवस्था तक ही सीमित नहीं है, बल्कि गैर-राज्य अभिनेताओं के उदय से भी कई चुनौतियाँ पैदा हो रही हैं।

तदुपरान्त सम्मेलन मुख्य शैक्षणिक सत्रों में चला गया, अर्थात्, (ए) युद्ध, आधिपत्य और रणनीति - सिद्धांतों और व्यवहार के बीच विश्व व्यवस्था; (बी) वेस्टफेलियन व्यवस्था से परे - एक बहुध्रुवीय दुनिया

में वैश्विक दक्षिण का पता लगाना और (सी) लैंगिकता, संघर्ष और विश्व व्यवस्था में टूटन - नारीवादी दृष्टिकोण। अकादमिक सत्र सत्ता के यथार्थवादी सिद्धांतों और ज़मीन पर जटिल वास्तविकताओं के बीच स्थायी तनाव पर केंद्रित थे। रूस-यूक्रेन युद्ध, भारत और चीन की उभरती हुई रणनीतियों और वैश्विक व्यवस्था के भविष्य पर शोधपत्र प्रस्तुत किए गए, जो एकध्रुवीय प्रभुत्व और बहुध्रुवीय संतुलन के दृष्टिकोण के बीच झूल रहे थे।

आगे के सत्रों में अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में संरचनात्मक असमानताओं और वैश्विक दक्षिण से एजेंसी के पुनरुत्थान की ओर बदलती बातचीत को शामिल किया गया। अंत में, चर्चा में युद्ध, व्यवस्था और कूटनीति के लैंगिकता आधारित दृष्टिकोण पर बल देते हुए अंतर-आलोचनाओं पर भी चर्चा की गई। इन सत्रों की अध्यक्षता पीएचडी शोधार्थियों ने की। छात्रों ने प्रश्नोत्तर सत्रों के माध्यम से भाग लिया और अपने विचार, टिप्पणियाँ साझा कीं और अपने संबंधित विषयों पर शोधपत्र प्रस्तुतकर्ताओं के साथ बातचीत की।

अकादमिक सत्र के अतिरिक्त सम्मेलन ने अकादमिक लेखन पर एक विशेष सत्र की मेजबानी की, जिसका शीर्षक था, 'शोध पत्र कैसे प्रकाशित करें?'। इस सत्र को अंतर्राष्ट्रीय शांति अध्ययन केंद्र, नई दिल्ली के डॉ. वसीम मल्ला ने संबोधित किया। उन्होंने शोध पत्र लिखने के लिए क्या करें और क्या न करें, इस बारे में एक महत्वपूर्ण अवलोकन प्रदान किया। उन्होंने प्रकाशनों के व्यावहारिक पहलुओं, सहकर्मी समीक्षा प्रक्रिया, स्पष्टता के लिए पेपर की संरचना, साहित्यिक चोरी, उद्धरण और प्रकाशन में नैतिकता के मुद्दों पर अपनी अंतर्दृष्टि प्रदान की।

एमएमएजे - एकेडमी ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज के प्रोफेसर अजय दर्शन बेहरा ने समापन भाषण दिया। इस सत्र की अध्यक्षता सामाजिक विज्ञान संकाय के डीन प्रोफेसर मोहम्मद मुस्लिम खान ने की। अंतरराष्ट्रीय संबंधों के विशेषज्ञ प्रोफेसर बेहरा ने विश्व व्यवस्था की बदलती रूपरेखा - बदलते गठबंधनों, तकनीकी व्यवधानों और विवादित संप्रभुता के बारे में अपनी महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि साझा की। उन्होंने वर्तमान विघटन को समझने के सैद्धांतिक महत्व को सामने रखा। उन्होंने छात्रों से भी बातचीत की और उनके द्वारा पूछे गए सवालों के जवाब दिए। सत्र का समापन प्रोफेसर मुस्लिम खान द्वारा नवोदित शोधार्थियों के लिए इस तरह के सम्मेलनों के महत्व पर संक्षिप्त नोट के साथ हुआ। उन्होंने प्रोफेसर बेहरा को उनकी आकर्षक टिप्पणियों के लिए धन्यवाद दिया।

सम्मेलन के संयोजक डॉ प्रेमानंद मिश्रा, नेल्सन मंडेला शांति एवं संघर्ष समाधान केंद्र के संकाय सदस्य द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ सम्मेलन का समापन हुआ। उन्होंने माननीय कुलसचिव और कार्यक्रम में उपस्थित अन्य गणमान्य व्यक्तियों के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने वक्ताओं और कर्मचारियों को उनके अथक प्रयासों के लिए धन्यवाद दिया, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि सम्मेलन एक बड़ी सफलता थी।

सम्मेलन में विश्वविद्यालय के विभिन्न क्षेत्रों से आए गणमान्य लोगों ने भाग लिया, जिनमें पश्चिम एशियाई अध्ययन केंद्र के प्रोफेसर हुमायूं अख्तर नाजमी, उत्तर पूर्व अध्ययन के प्रोफेसर अमरजीत, जवाहरलाल नेहरू अध्ययन केंद्र के डॉ. इति बहादुर और जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली के सुरक्षा प्रमुख श्री सैयद अब्दुल राशिद शामिल थे।

प्रो .साइमा सईद
मुख्य जनसंपर्क अधिकारी
जामिया मिल्लिया इस्लामिया